

THE PATIALA AND EAST PUNJAB STATES UNION APPROPRIATION (VOTE ON ACCOUNT) BILL, 1953

THE DEPUTY MINISTER FOR FINANCE (SHRI M. C. SHAH) : Sir, I beg to move:

"That the Bill to provide for the withdrawal of certain sums from and out of the Consolidated Fund of the State of Patiala and East Punjab States Union for the service of a part of the financial year 1953-54, as passed by the House of the People, be taken into consideration."

This, Sir, is a Vote on Account. We want to have four months' service expenditure to be voted as it will not be possible for all these demands to be passed by the House of the People in the course of the next month.

MR. CHAIRMAN: Motion moved:

"That the Bill to provide for the withdrawal of certain sums from and out of the Consolidated Fund of the State of Patiala and East Punjab States Union for the service of a part of the financial year 1953-54, as passed by the House of the People be taken into consideration."

LT. COL. J. S. MANN (PEPSU):

ले० कर्नल ज० एस० मान (पेप्सू) : चेयरमैन साहब, कल से इस हाउस में पटियाला और पंजाब स्टेट यूनियन का जो बजट पेश हुआ उसके मुतालिक बहुत बहस हुई। मैंने उन लोगों को भी सुना जिन्होंने कि पेप्सू यूनियन को कभी नक्शे पर भी नहीं देखा है लेकिन उन्होंने मुखालिफत की कि पेप्सू में यह हो रहा है वह हो रहा है, वहां ला एंड आर्डर (law and order) नहीं है, वहां तालीम नहीं है, वहां सड़कें नहीं हैं और वहां ऐसा अंधाधुन्ध मचा हुआ है कि जिसके मुतालिक जमीन आसमान के कुलाबे मिलाये जा रहे हैं। साहबे सदर, आपकी वसातत से उन साहबान से मैं अर्ज करना चाहता हूं,

जिन्होंने कि पेप्सू की अहमियत को नहीं पहचाना और जिन्होंने नहीं देखा कि हिन्दुस्तान के नक्शे पर पेप्सू की क्या अहमियत है और क्या क्या कुर्बानियां करके उन्होंने हिन्दुस्तान का नक्शा बनाया है, उन लोगों को सुनकर मैं हैरान हूं उनके इस हाउस में ऐसी बातें कहने से, जिनका कि उनको पता नहीं है, मुझे अफसोस आता है। मैं यह समझता था कि इस हाउस में बहुत आलिम लोग, बड़े अच्छे लोग, हर एक चीज को पहचानने वाले लोग हैं और वे वही बात कहेंगे जिसको कि पहले वे तौल लें, यानी पहले बात तौल लेंगे तो फिर बात कहेंगे लेकिन मुझे अफसोस हुआ कि कोई साउथ (South) से उठता है और कोई वेंस्ट (West) से उठता है और कोई किसी तरफ से उठता है और पेप्सू के ऊपर नुक्ताचीनी शुरू हो जाती है। मैं इसका और कोई मतलब नहीं समझता सिर्फ यह समझता हूं कि इसका बहुत जबरदस्त प्रोपेगंडा (propaganda) किया गया है कि वहां सिर्फ नान-कांग्रेस (Non-Congress) हुकूमत थी। इस वास्ते हर एक के दिल में यह चीज बैठाई गई कि यह हो रहा है, वह हो रहा है। दरअसल अगर मैं आपकी खिदमत में आइटम बाई आइटम (item by item) अर्ज करूं तो आपको मालूम हो जायेगा कि पेप्सू में वे आफिसर्स (officers) और वे तजुर्वेकार आदमी काम कर रहे हैं जिन्होंने कि हिन्दुस्तान में इतना तजुर्बा हासिल किया हुआ है कि उनका कोई सानी नहीं मिलता।

साहबे सदर, पेप्सू के फाइनेंस सेक्रेटरी (Finance Secretary) मिस्टर वाटेल हैं जो कि ज्वाइंट पंजाब (Joint Punjab) में एकाउंटेंट जनरल (Accountant General) थे और वे इतने काबिल आदमी हैं कि मैं दावे से कह सकता हूं कि हिन्दुस्तान भर में ऐसा फाइनेंस सेक्रेटरी

[Lt.-Col. J. S. Mann.]

और ऐसा फाइनेंशर (financier) आपको नहीं मिलेगा जैसा कि पैप्सू में है। वह पेप्सू के फाइनेंसेज को कंट्रोल कर रहे हैं और पैसे पैने को इकट्ठा करके पेप्सू की बहबूदी को नज़र में रख रहे हैं और पैसों को ठीक से डिपार्टमेंटों में तबसीम कर रहे हैं। इसी तरह से एजुकेशन डिपार्टमेंट में वहां डा० हरनाम सिंह हैं, जोकि बड़े काबिल आदमी हैं। उन्होंने पेप्सू की तालीम का नक्शा बदल दिया है, वहां पहले तालीम बिल्कुल नहीं थी लेकिन दो तीन सालों में देखिए कि वहां तालीम इतनी ज्यादा बढ़ गई है, पिछले साल इतने स्कूल खुल गये हैं और लोगों में तालीम का इतना शौक पैदा हो गया है कि लोग अपने आप आधा रुपया देकर हर गांव में और हर जगह स्कूल खुलवा रहे हैं। इसी तरह से पी० डब्लू० डिपार्टमेंट (P. W. Department) के इंजीनियर डिपार्टमेंट (Irrigation Department) में हमारे रघुवीर सिंह जी इंजीनियर हैं। हिन्दुस्तान में मिस्टर कोशला, जो कि चीफ इंजीनियर (Chief Engineer) हैं उनके बाद वह दूसरे दर्जे के शास्त्र हैं जो कि पेप्सू यूनियन में काम कर रहे हैं।

KHWAJA INAIT ULLAH (Bihar):

स्वाजा इनायत उल्ला (बिहार) :
सब अफसरों की तारीफ ही कर रहे हैं ?

LT. COL. J. S. MANN:

ले० कर्नल जे० एस० मान : साहब-सदर, आप वहां की कैनल (canal) को देखिए, वहां की सड़कों को देखिए, वहां आठ, दस कनल खुद चुकी हैं जिनकी वजह से वहां इतना अनाज और इतनी चीजें पैदा होंगी कि पेप्सू सारे हिन्दुस्तान को दे सकेगा। इसी तरह से सिविल सप्लाइज (Civil

Supplies) के मुहकमों में मिस्टर कश्यप हैं जोकि एक आला आदमी हैं। वह वहां से कितना अनाज बचा कर और दूसरे प्रा-विसेज (Provinces) को दे रहे हैं।

इसके अलावा मेरी समझ में नहीं आता कि ला एंड आर्डर का जिक्र किया जाता है। वहां हिन्दुस्तान भर में माने हुए इंडियन पुलिस (Indian Police) के आदमी सरदार गुरुदयाल सिंह बैठे हुए हैं जिन्होंने कि सैकड़ों डाकुओं को गोलियों का निशाना बनाया है और जो दो चार बाकी रह गये हैं उनको भी गन्ने के महीने के बाद राउंड अप (round up) करके खत्म कर देना चाहते हैं।

साहबों सदर, यह भी कहा जाता है कि पेप्सू यूनियन की जरूरत नहीं है, उसको मर्ज कर दिया जाये, उसको खत्म कर दिया जाये और उसके बास्ते इतना रुपया लगाने की जरूरत नहीं है। मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों किया जाय। पेप्सू यूनियन के आदमी भी उसी हिन्दुस्तान के बासिन्दे हैं जिसमें कि यू० पी०, सी० पी० है, जिसमें कि दिल्ली प्राविन्स है, पंजाब प्राविन्स है, बाम्बे प्राविन्स है, मद्रास प्राविन्स है और भी बहुत से प्राविन्स हैं। अभी ही आपने १०, ११ जिलों को एक छोटा सा आंध्र प्राविन्स बना दिया है।

SHRI B. RATH (Orissa):

श्री बी० रथ (उड़ीसा) : वहां की पापुलेशन (population) ज्यादा है।

LT. COL. J. S. MANN:

ले० कर्नल जे० एस० मान : May be populated. हो सकता है कि उसकी रेवेन्यू (revenue) और पापुलेशन ज्यादा

हो । लेकिन पेप्सू एक बार्डर प्राविंस (border province) है इसलिए बजाय इसके कि हर एक बात के लिए उसकी नुक्ता-चीनी की जाय उसको बहुत सी सहूलियतें देकर अपने बार्डर को मजबूत करना चाहिए और उसे ज्यादा से ज्यादा तरक्की देनी चाहिए । बजाय इसके यहां से बैठकर बिना उसकी अहमियत को जाने हुए, बिना उसकी असलियत को जाने हुए यह कह देना कि उसको मर्ज (merge) कर दिया जाय मेरे ख्याल में ठीक नहीं है । जिसको आप नहीं जानते उसके लिए यह कह देना कि उसको मर्ज कर के हिमाचल प्रदेश में मिला दिया जाय या कुछ और कर दिया जाय मैं ठीक नहीं समझता । मैं कहता हूं कि हिमाचल प्रदेश को पंजाब में क्यों मिलाया जाय, उनकी आपस में मिलती जुलती कोई जवान नहीं है । इसलिए मैं कहता हूं कि उसको या पेप्सू को मिला कर एक यूनियन क्यों बनाई जाय । अगर काश्मीर प्राविंस के लिए यह कहा जा सकता है कि वहां के लोगों की राय की जरूरत है और लोग अपनी राय देंगे कि कहां वह जाना चाहते हैं तो फिर क्या पेप्सू की राय नहीं ली जायेगी कि जो लोग पेप्सू में रहते हैं वह अपनी किस्मत का फैसला करेंगे कि उनको किधर जाना है और किधर नहीं जाना है और उनको किस तरह अपने आपको जिन्दा रखना है और बनाना है । कोशिश यह की जा रही है कि सब को मिला कर कांग्रेस हुकूमत बना दी जाय । इस तरह नहीं हो सकेगा । मैं अर्ज करता हूं कि अगर ऐसी चीजें करनी हैं तो जो करें उसमें वहां के लोगों को साथ लेकर करें । उनको अपने साथ लाने की कोशिश

करें, उनके लिए अपना कुछ खर्च करें उन को बतावें कि हम आपके साथ रह कर, आप के साथ मिलकर ज्यादा से ज्यादा क्या आसानियां दे सकेंगे और किस तरह से आपकी ज्यादा से ज्यादा बहबूदी कर सकते हैं ।

अगर ऐसा होगा तो लोग खुद खुद अपनी जान कुर्बान करने के लिए तैयार होंगे । मगर आज आप यहां बैठ कर अगर तानाजनी करेंगे तो मैं आपकी खिदमत में यह अर्ज कर देना चाहता हूं कि वह कभी भी आपके साथ आने को तैयार नहीं हैं और न होंगे ।

साहेब सदर

MR. CHAIRMAN: It's time!

LT. COL. J. S. MANN: I would just finish. I want to say something regarding Agriculture Department, Sir.

एग्रीकल्चर के मुहकमे में जो शरू इस वक्त काम कर रहे हैं उनको पंजाब वापस मांग रहा है । उन्होंने जहां पहले पेप्सू में आठ हजार एकड़ के करोड़ काश्त होती थी उसको बढ़ा कर अब १० हजार एकड़ कर दिया है । अब जितनी काटन (cotton) जितना बीट (wheat) और जितना मेज (maize) पेप्सू देने लग गया है उसका पड़के अन्दाजा भी नहीं किया जाता था ।

तो मैं कहता हूं कि जो यह कहा जाता है कि सर्विसेज (services) करप्ट (corrupt) हैं वह गलत है । इतने चोटी के आदमी होते हुए, इतने अच्छे आदमी होते हुए भी अगर आप इस तरह उनको बदनाम करेंगे तो मैं कहता हूं कि उनके काम में बड़ा ही धक्का लगेगा । मैं कहता हूं कि लोगों को बजट को पढ़ना चाहिए और उसको देखना चाहिए कि वहां कितनी तरक्की हुई है, कितने अच्छे काम हुए हैं, कितनी अच्छी नहरें वहां खुद चुकी हैं, कितने अच्छे स्कूल बन गये हैं और कितनी अच्छी सड़कें बन चुकी हैं, वहां कितना रिट्रिब्यूटेशन

[Lt. Col. J. S. Mann.]

(rehabilitation) का काम हुआ है कि जिसकी वजह से लाखों आदमी वहाँ आकर बसे हैं और उनको आराम से वहाँ बसाया गया है, उनको घर दिये गये हैं खेत दिये गये हैं, मकान बनवा कर उनको दिये गये हैं, उनके लिए ज़मीनों के ऊपर कुर्बे लगवा कर दिये गये हैं। इसलिए मेरी समझ में नहीं आता कि यह कहाँ तक ठीक है कि यों ही कह दिया जाय कि पेप्सू में कुछ नहीं हो रहा है। हाँ, वहाँ जो तकलीफ़ है, जो बिस्वेदारों को ओर पीजेंट्स (peasants) को दुश्वारियाँ हैं वे धीरे धीरे दूर होंगी और उनको दूर करना है। मुझे यकीन है कि जब सरदार लाल सिंह जी कांसालिडेशन (consolidation) के मुहकमे में लगे हुए हैं तो ये दिक्कतें जरूर दूर होंगी। वहाँ कांसालिडेशन का बहुत काफ़ी काम हुआ है। अगर आप तशरीफ़ ले जायें तो यह सब देख सकते हैं और इन साहबान को बता सकते हैं कि क्या क्या अच्छी अच्छी चीज़ें हैं और क्या क्या अच्छे अच्छे काम हुए हैं। मैं कहता हूँ कि तमाम हिन्दुस्तान के आदमी आकर देखें कि इन आदमियों ने क्या क्या अच्छे काम किये हैं और उन्होंने क्या क्या सूरतें पैदा की हैं।

मैं जनाब का मशकूर हूँ कि मुझे आपने बोलने का इतना वक़्त दिया।

[For English translation, see Appendix IV, Annexure No. 89.]

MR. CHAIRMAN: Thank you. Sardar

Kartar Singh. Be very brief.

SHRI KARTAR SINGH (Pepsu): Yes, Sir. Mr. Chairman, my learned friend from PEPSU has given certain instances to show that the administration in PEPSU was efficiently run by its officers. But I say that all those

instances that he has given rather go to show that my contention is correct. Not a single instance has been given by my hon. friend involving the permanent PEPSU services. He has referred to Dr. Harnam Singh. He was a lent officer from Punjab. He has referred to Sardar Gurdial Singh, I.G.P. who is also a lent officer from Punjab. Then he has referred to Sardar Lai Singh who is also a lent officer from Punjab. Then he has referred to the officers of the Agricultural Department who are all lent officers from Punjab. So, it goes to show that whatever he has said about efficiency does not apply to the permanent officers of PEPSU. About those officers not a single instance has been given by my hon. friend.

SHRI M. S. RANAWAT: (Rajasthan): Does the hon. Member mean to suggest that in spite of those lent officers from Punjab the administration is inefficient?

MR. CHAIRMAN: Order, order. No interruptions.

SHRI KARTAR SINGH: I am coming to that. With regard to the two other gentlemen to whom my hon. friend referred, my submission is that they are retired hands and they have been re-employed by the State.

Now I shall refer to the inefficiency of the Administration. I shall refer to only one case, not more. A point was made in the other House by my Communist friends, and also in this House, that action should be taken against those returning officers in PEPSU who had illegally rejected nomination papers.

SHRI S. N. MAZUMDAR (West Bengal): Not that action should be taken. We said that inquiry should be made.

SHRI KARTAR SINGH: It presupposes action after inquiry.

MR. CHAIRMAN: That is a different story.

SHRI KARTAR SINGH: I do not go further: I go to the very district to which my hon. friend Sardar Joginder Singh Mann belongs, namely, the district of Fatehgarh Sahib. In that district there are four constituencies. It is a small district with only four constituencies, each constituency with a population of about 57,000. The population of the whole district is 2 lakhs and 10 or 20 thousands. The Deputy Commissioner there was Sardar Bal-want Singh. My hon. friend fought the election from that very constituency, and in his case he was the returning officer. In this district, the elections of three out of a total of four, have been set aside on the ground that that gentleman had illegally rejected the nomination papers. I am now referring to the efficiency of the Administration. In the case of the fourth, there were many nomination papers. It is an interesting story. One advocate had also filed nomination papers. He was an advocate from Bassi. Unfortunately for him, his age was entered as 23, in the electoral roll. The returning officer said, "How is it that your age has been shown as 23?" The man protested that his son's age was about 23, and that it had been wrongly shown as 23 in his case. It could not be 23, as he had been practising as a lawyer for 15 or 18 years. The returning officer said, "All right; bring proof." On the third day the advocate brought with him all necessary documents. He brought his own age certificate and the age certificate of his son. The returning officer said, "Well, since your age is entered as 23, therefore, on the ground that you are not 25, I reject your papers". From this very constituency nomination papers of others were also rejected on similar flimsy grounds. Others have challenged by petitions the illegitimate rejection of their nomination papers; and the election held in this 4th constituency is one of the 22 or* 23 elections that may have to be set aside. What happened? After the elections he retired, having attained the age of 55. A point was made by my hon. friend day before yesterday that since there was a Congress

Minis-

try and the elections were held under the Congress Ministry, returning officers were under the influence of the Congress Ministry and had illegally rejected the nomination papers of the candidates. Now in this district are the home constituencies of all the Sikh Ministers in PEPSU. Sardar Gian Singh Rarewala belongs to a constituency in this district and fought the election there. Sardar Mihan Singh, another Minister, also belongs to that constituency. Sardar Dara Singh, though fought elections from adjoining Bhadsan constituency, has the same home constituency. Sardar Bhupinder Singh also now belongs to a constituency in this very district.

LT.-COL. J. S. MANN: No.

SHRI KARTAR SINGH: He has got land in this very district, at a distance of 3 miles. After the elections, what happened?

MR. CHAIRMAN: The hon. Member is going very much beyond the scope of the Bill.

SHRI KARTAR SINGH: Only two minutes.

MR. CHAIRMAN: The hon. Member has already taken seven minutes.

SHRI KARTAR SINGH: What happened? The Election Tribunal has remarked, while setting aside the election of Sardar Gian Singh Rarewala and of Sardar Mihan Singh that it is unable to understand for whose benefit this was done and passed strictures against this returning officer. After his retirement this officer was reemployed by Sardar Gian Singh as a settlement officer. This is only one instance. More instances can also be given.

LT.-COL. J. S. MANN: He was not 55.

SHRI KARTAR SINGH: Sir, this is the sort of administration that is being run there. A clear case was made out by all sections in this House that the:

[Shri Kartar Singh.] majority of the services in PEPSU have vested interests there, and my hon. friend has not been able to refute that charge.

MR. CHAIRMAN: Would the hon. Minister like to speak?

SHRI M. C. SHAH: No, Sir.

MR. CHAIRMAN: The question is:

"That the Bill to provide for the withdrawal of certain sums from and out of the Consolidated Fund of the State of Patiala and East Punjab States Union for the service of a part of the financial year 1953-54, as passed by the House of the People, be taken into consideration."

The motion was adopted.

MR. CHAIRMAN: We now take up the clause-by-clause consideration of the Bill. There are no amendments.

Clauses 2 and 3 and the Schedule were added to the **Bill**.

Clause 1, the Title and the Enacting Formula were added to the Bill.

SHRI M. C. SHAH: Sir, I move: "That the Bill be returned."

MR. CHAIRMAN: The question is: "That the Bill be returned."

The motion was adopted.

THE APPROPRIATION (No. 2) BILL, 1953.

THE DEPUTY MINISTER FOR FINANCE (SHRI M. C. SHAH): Sir, I beg to move:

"That the Bill to authorise payment and appropriation of a certain sum from and out of the Consolidated Fund of India for the service of the financial year 1952-53, as passed by the House of the People, be taken into consideration."

Sir, this does not require a speech as the House is well aware that already we have passed an Act for the distribution of the Excise Duty as recommended by the Finance Commission. And when the Budget was introduced, it was not possible to make provision for this sum and therefore now by this Appropriation Bill we want to make a provision for the sum to be given to all the States as provided for in the Act that we have already passed.

MR. CHAIRMAN: Motion moved:

"That the Bill to authorise payment and appropriation of a certain further sum from and out of the Consolidated Fund of India for the service of the financial year 1952-53, as passed by the House of the People, be taken into consideration."

(No hon. Member rose to speak.)

MR. CHAIRMAN: The question is:

"That the Bill to authorise payment and appropriation of a certain further sum from and out of the Consolidated Fund of India for the service of the financial year 1952-53, as passed by the House of the People, be taken into consideration."

The motion was adopted.

MR. CHAIRMAN: We take up now the clause-by-clause consideration of the Bill. No amendments.

Clauses 2 and 3 and the Schedule were added to the Bill.

Clause 1, the Title and the enacting formula were also added to the Bill.

SHRI M. C. SHAH: Sir, I beg to move:

"That the Bill be returned."

SHRI KANHAIYALAL D. VAIDYA (Madhya Bharat):

श्री कन्हैयालाल दी० वैद्य (मध्य भारत) :
अध्यक्ष महोदय, जो बिल इस सदन के सामने
रखा गया है उसके अन्तर्गत जिन जिन राज्यों